क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग के विस्तार से सुनहले भविष्य का अभ्युदय

4 मार्च, 2013 इलाहाबाद । मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि वे सभी मनुष्य जो ईश्वरीय दिव्य प्रेम के साथ पूरी तरह एकाकार नहीं हुए हैं, काल के प्रभाव से संचालित होते हैं । ग्रह-नक्षत्र, सौर्यमण्डल, पेड़-पौधे, वैक्टीरिया-वाइरस और सभी जीव-जन्तु काल के प्रभाव से नियंत्रित होते हैं । क्रियायोग ध्यान से प्राप्त दिव्य एकाग्रता की शक्ति से खगोल विज्ञान पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है कि महाविषुभ (वर्नल इक्वीनॉक्स) अभिमेष राशि के प्रथम विन्दु से 22 डिग्री 49 मिनट 54 सेकेण्ड दूर है । गणितीय गणना से यह स्पष्ट हो जाता है कि मेष राशि के प्रथम विन्दु से महाविषुव (वर्नल इक्वीनॉक्स) दूर हटने लगा, तब से अब तक 2013 वर्ष बीत गये हैं । वर्तमान युग आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष चल रहा है । वर्तमान युग आरोही द्वापर युग होने के कारण मानव जाति के मस्तिष्क में ब्रह्माण्ड की सभी रचनाओं के प्रति आन्तरिक प्रेम प्रकट हो रहा है । मनुष्य-मनुष्य के बीच में प्रतिवर्ष दूरी घटती जा रही है तथा मनुष्य तालाब, झील, नदी, पहाड़, समुद्र और उनमें रहने वाले जीव-जन्तु के सुरक्षा और संरक्षण के लिए उत्तरोत्तर प्रयत्नशील है । आज से कुछ सौ वर्ष पहले जब कलियुग का समय था तब ब्रह्माण्ड की विभिन्न रचनाओं के प्रति मानव के हृदय में पर्याप्त प्रेम का प्रस्फुटन नहीं हुआ था, इसलिए पहाड़ों की खुदायी, पेड़ों की कटाई व जन्तुओं के मारने में कोई प्रतिबंध नहीं था । बड़े-बड़े जानवरों का शिकार करने में लोग गर्व का अनुभव करते थे ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे स्पष्ट किया कि अब द्वापर युग के इस 313वें वर्ष में चूँकि कलियुग

के समाप्त हुए काफी वर्ष बीत चुका है, मनुष्य जाति आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करने लगा है और लोगों में एक दूसरे से जुड़ने से संबंधित अनगिनत घटनाएँ नित्य नया जन्म ले रही हैं । यह स्पष्ट दिखायी पड़ रहा है मानव के ज्ञान में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है । उत्तरोत्तर भविष्य सभी के लिए सुनहला है । विश्व के सभी राष्ट्रों में उन नियमों की पुनर्स्थापना होगी जिससे सभी राष्ट्र एक दूसरे से अच्छा संबंध बना सकेंगे । वे सभी वस्तुएँ सस्ती होंगी जो मानव-मानव को व राष्ट्र-राष्ट्र को जोड़ने में मदद करेंगी और मनुष्य के हृदय में वे सभी ज्ञान प्रकाशित होंगे जिससे ब्रह्माण्ड की सभी रचनाओं की सुरक्षा और संरक्षण आसानी से हो सकेगा ।

क्रियायोग के बारे में विस्तार से स्पष्ट करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कहा कि भविष्य में आध्यात्मिक विज्ञान क्रियायोग ध्यान के रूप में पूरे विश्व में फैल जाएगा । क्रियायोग ध्यान के प्रभाव से राष्ट्रों के बीच में विध्वंसकारक युद्ध बंद हो जाएँगे, मानव-मानव को तथा मानव को ब्रह्माण्ड की सभी रचनाओं से जोड़ने के लिए नई शिक्षा नीति लागू होगी, शासन व प्रशासन की वर्तमान व्यवस्था सब बदल जाएगी और मनुष्य का जीवन बहुत ही खुशहाल होगा ।

कार्यक्रम के दौरान स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने शास्त्रों की विस्तारपूर्वक आध्यात्मिक विवेचना किया । उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित समस्त पात्र और उनसे युद्ध की घटना साधना की विभिन्न स्थितियाँ हैं । आत्मज्ञान की प्राप्ति में प्रकट होने वाली बाधाएँ तथा उन विजय प्राप्त करने के लिए साधक के द्वारा किया गया आध्यात्मिक संघर्ष गीता में विभिन्न पात्रों से युद्ध के रूप में वर्णित है । स्वामी जी ने कहा कि महाभारत के समस्त पात्र आज भी मानव स्वरूप में विभिन्न शक्तियों के रूप में विद्यमान हैं । ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी अतीत में घटित हुआ था और जो भविष्य में घटित होगा तथा वर्तमान की सम्पूर्ण घटनाएँ स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण में घटित हो रही हैं । इसी सत्य को स्पष्ट करते हुए ऋषियों ने कहा है यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे । ब्रह्माण्ड के प्रत्येक पिण्ड में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाहित है । किसी भी रचना में ध्यान बढाकार अतीत, वर्तमान और भविष्य को जाना जा सकता है । बाह्य किसी रचना में ध्यान बढ़ाकार सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति करने में लाखों जन्म लग जाते हैं । पूर्ण ज्ञान को एक जीवनकाल के अल्प समय में प्राप्त करने के लिए स्वरूप में मन को केन्द्रित करना पड़ता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने अपने अंदर महाभारत के विभिन्न पात्रों के स्वरूपों को स्पष्ट करते हुए कहा कि महाभारत काल के भीष्म अपने अंदर अहंकार, द्रोणाचार्य आदत, कर्ण राग द्वेष, दुर्योधन कामना,

दुष्शासन क्रोध, शकुनी मोह, कृपाचार्य अविद्या, अश्वत्थामा कर्मफल के प्रतीक हैं । क्रियायोग की साधना से साधक के अंदर की सम्पूर्ण सीमित प्रवृत्तियाँ जिन्हें कौरव शक्ति कहा गया है, का असीम दैव शक्ति में रूपान्तरण हो जाता है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, मत्सर (आदत, अहंकार, अज्ञान) आदि जो अन्तःकरण की कौरव शक्तियाँ हैं का पाण्डव शक्ति - दम, शम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधान में रूपान्तरण हो जाता है । सीमित शक्तियों का असीम अनन्त शक्ति में रूपान्तरण को युद्ध कहते हैं तथा इसी को उर्ध्वगमन कहा गया है । स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग के विस्तार से शास्त्रों की सही व्याख्या प्रकट होगी जिससे जातिवाद, सम्प्रदायवाद का समापन होगा और भारत अपने शक्तिमय और ज्ञानमय रूप में प्रकट होकर विश्व की उच्चतम् सेवा करेगा।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक, सायं 4:00 बजे से 7 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है । क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैण्ड आदि देशों से आये हुए तीर्थयात्री, कल्पवासी और साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं । स्वामी जी का लक्ष्य है क्रियायोग के दीप को भारत के घर–घर में जलाकर मानव तथा राष्ट्र को उच्चतम् सेवा प्रदान करना ।

- योगमाता